चेतावनी! आगे छिपी चट्टानें हैं! (4:32-5:14)

अपनी पत्री में, यहूदा ने झूठे शिक्षकों के कई रंगदार चित्र दिए हैं। कई वर्ष पूर्व उनमें से एक की ओर मेरा ध्यान खिंचा था: ''ये तुम्हारी प्रेम सभाओं में तुम्हारे साथ खाते-पीते, समुद्र में *छिपी हुई चट्टान* सरीखे हैं''[1] (आयत 12)। मैं यह तो जानता था कि ''प्रेम सभाएं'' शब्द आरम्भिक मसीहियों के संगत में भोजन करने के लिए इस्तेमाल हुआ था[2] और सोचता था कि ''छिपी हुई चट्टान'' भोजन में आ जाने वाले पत्थरों को कहा गया होगा। क्योंकि मेरी कटोरी में कुछ कंकर[3] आ जाते और हैम्बर्गर में हड्डियों के साथ मैं इन्हें भी चबा जाता था, इसलिए मुझे लगता था कि यह उदाहरण यहीं के लिए उपयुक्त होगा। अवांछनीय आश्चर्य अच्छे से अच्छे खाने का स्वाद खराब कर सकते हैं और झूठे शिक्षक मसीह के साथ हमारी संगति का नाश कर सकते हैं!

''छिपी हुई चट्टानों'' के लिए मेरी व्याख्या काफ़ी सजीव थी, परन्तु गलत थी। यदि मैं लैंडलॉक्ड ओक्लाहोमा में न पला होता, तो यह अर्थ और स्पष्ट हो सकता था। अन्तत, मुझे पता चला कि ''छिपी हुई चट्टान'' समुद्र की सतह के कुछ नीचे की चट्टानों को कहा गया है, ये छिपी हुई चट्टानें नाव संचालन के लिए बड़ा गम्भीर ख़तरा बनती हैं। पौलुस की रोम यात्रा के समय, उसके जहाज़ को ''छिपी हुई चट्टानों'' के कारण काफ़ी हानि हुई थी (27:41)। सदियों से असंख्य जहाज़ इन छिपी हुई चट्टानों से टकरा चुके हैं।[4]

प्रेरितों 4 के अन्तिम और 5 के प्रथम भाग का अध्ययन करते समय, यहूदा 12 का रूपक मेरे मन में आया। 1 से 3 अध्यायों में कलीसिया का जहाज़ आराम से चल रहा था।[5] अध्याय 4 में सताव का पहला तूफान उठा, परन्तु विश्वासी भाई तूफान से बच निकले थे। परन्तु, थोड़ा आगे अध्याय 5 में छिपी हुई चट्टान थी, जिसमें कलीसिया का विनाश कर सकने की क्षमता थी!

आसमान साफ़ (4:32-37)

सताव की आंधी के पश्चात कुछ समय के लिए कलीसिया को साफ़ आसमान और स्वच्छ हवा की आशीष मिली। 4:32-37 में, लूका ने प्रेम निष्ठा, और उदारता की उस कहानी को जारी रखा जो 2:43-47 में आरम्भ हुई थी। क्रूस की छाया में, यीशु ने प्रार्थना की थी कि प्रेरितों के प्रचार द्वारा उस पर विश्वास लाने वाले एक हों (यूहन्ना 17:20,21)। कलीसिया के इन आरम्भिक दिनों में उस प्रार्थना का उत्तर मिल गया था:[6] ''और विश्वास

करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे''[7] (आयत 32क)। अनुवादित शब्द ''मण्डली'' का मूल अर्थ ''जनसमुदाय'' है।[8] वे दिखने में *बहुत से* लगते होंगे परन्तु वास्तव में वे *एक* थे। वे सब एक थे क्योंकि वे मसीह से जुड़े हुए थे!

उनकी एकता के फलस्वरूप बलिदान करने की स्वतन्त्रता मिली:

> ... यहां तक कि कोई भी अपनी सज़्पति को अपनी नहीं कहता था; परन्तु सब कुछ साझे का था ... और उनमें से कोई दरिद्र न था; क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उन को बेच बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे; और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार (वे)[9] हर एक को बांट दिया करते थे (आयतें 32ख-35)।

परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वायदा किया था, ''तेरे बीच कोई दरिद्र न रहेगा,'' परन्तु उसमें एक शर्त थी: यदि ''तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने'' (व्यवस्थाविवरण 15:4, 5)। इस्राएल इस शर्त को पूरा नहीं कर सका, सो लोग इस प्रतिज्ञा को प्राप्त करने में नाकाम रहे। अन्त में, *आत्मिक* इस्राएल में, परमेश्वर के लोग उसकी इच्छा पूरी करने के लिए समर्पित हुए। इस कारण हम यह अद्‌भुत बात पढ़ते हैं कि ''उनमें से कोई दरिद्र न था''![10] वर्षों से इस आदर्श स्थिति तक पहुंचना असंज़्य समाजों का लक्ष्य रहा है। संसार कहता है कि जहां निर्धनता पाई जाती है, ''वहां सरकार को चाहिए कि इसे दूर करने के लिए योजनाएं बनाए।'' लूका का सुझाव होगा ''सबसे बड़ी आवश्यकता वहां मसीह के आत्मा का होना है!''

यह स्थिति इसलिए सज़्भव हो सकी क्योंकि उनमें से ''कोई भी अपनी सज़्पत्ति को अपनी नहीं कहता था।'' जन्म के बाद, बच्चा सबसे पहले शब्दों में ''मेरा''[11] ही सीखता है; इनके *नये* जन्म के बाद, इन्हें सबसे पहले भूलने वाले शब्दों में ''मेरा'' भी था। वे अपनी सज़्पत्तियों को ''हमारी'' अर्थात अपनी, साझे की और अपने भाइयों की सज़्पत्ति मानते थे। इससे भी बड़ी बात, वे अपनी सज़्पति को ''*उसकी*'' मानते थे। उन्हें पता चल गया था कि जो कुछ भी उनका था वह सब *परमेश्वर*[12] से मिला था और वे तो केवल उसकी सज़्भाल करने वाले ही थे। यदि परमेश्वर उनके पास से कुछ या सारा लेकर अपने दूसरे बच्चों को खिलाना चाहे तो उन्हें इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हर एक मसीही ने तुरन्त अपनी सारी सज़्पत्ति बेच दी और प्राप्त धन को साझे कोष में डाल दिया होगा।[13] बल्कि, भाइयों तथा बहनों की *आवश्यकता के अनुसार* उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अपनी सज़्पत्ति बेची थी। वे क्या ढंग अपनाते थे, इसका सही-सही हमें नहीं पता।[14] शायद जब कोष कम होने लगता, तो जो-जो आवश्यकताएं होतीं उनकी घोषणा कर दी जाती होगी और जो कोई अपनी धन-सज़्पत्ति के अनुसार जितना ला सकता, वह ले आता होगा। या ऐसा भी हो सकता है कि उनकी सभाओं में विशेष आवश्यकताओं के बारे में बता दिया जाता हो, और वहां उपस्थित लोग स्वेच्छा से तब तक लाते रहते होंगे जब तक कि उसे सज़्भालने वाला यह न कह दे ''बस, अब काफ़ी

हो गया!''[15]

ढंग वे कोई भी अपनाते हों, परन्तु ''वे उन (अपनी सज़त्तियों) को बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते और, उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे।''[16] स्पष्ट है कि ज़रूरतमन्दों में आरज़्भ में तो प्रेरित ही बांटते थे, (बाद में काम का बोझ बढ़ने लगा, और उन्हें सहायता की आवश्यकता पड़ी, जैसा कि 6:1-4 से पता चलता है)।

मसीही लोगों का ऐसा करना प्रेरितों द्वारा बनाया कोई नियम नहीं था (5:4), बल्कि उनका ऐसा करना एक दूसरे की परवाह और उनके उमड़े प्रेम के कारण था! उनकी उदारता स्वेच्छा से थी। मुझे नहीं मालूम कि आपको प्रभु की कलीसिया में इस तरह का व्यवहार देखने का सुअवसर मिल पाया है या नहीं, किन्तु मुझे मिला है। क्योंकि मैं हमेशा ही किसी ऐसे राज्य में रहा जो ''वैलफेयर स्टेट अर्थात कल्याणकारी राज्य'' होता है, जिसमें ज़रूरतमन्दों की भलाई के लिए धन इकट्ठा करने के लिए हर एक पर टैक्स लगाया जाता है, ऐसा उत्साह मैंने केवल स्थानीय लोगों के परोपकार के लिए ही नहीं देखा।[17] मैंने कलीसिया के सदस्यों को स्वेच्छा से अपनी सज़त्तियां बेचकर स्थानीय मण्डली की सहायता करते और विशेषकर खोए व नाश हो रहे संसार में सुसमाचार भेजने के लिए सहायता करते देखा है!

दूसरों के साथ बांटने के लिए इस वृत्तांत में ही आयत 33 भी जुड़ती है: ''और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।'' पहली नज़र में, यह आयत फालतू लगती है; इसे आयत 31 के बाद होना चाहिए था। परन्तु, दूसरी बार विचार करने पर लगता है कि यह आयत यहां पर कलीसिया में पाए जाने वाले प्रेम तथा उदारता के *फल* को बताने के लिए रखी गई: उनके *जीवनों के* संदेश से *प्रचार किए गए* संदेश को शक्ति मिली। यहां अनुवादित शब्द ''अनुग्रह'' सज़्भवत: *लोगों की* उनसे प्रसन्नता[18] ही थी जो 2:47 में बताई गई। मसीहियों द्वारा अपनों की देखभाल के कारण गैर मसीही लोग इतने प्रभावित हुए कि वे प्रेरितों के वचन को और भी ध्यान से सुनने लगे। जो मसीही, मसीह के स्वरूप हैं सुसमाचार प्रचार के लिए उनके जैसा कोई और सहायक हो ही नहीं सकता; जो मसीही, उस के जैसे नहीं हैं, सुसमाचार के प्रचार में उनसे बड़ी बाधा और कोई नहीं हो सकती!

इन मसीहियों की उदारता का साधारण ढंग बताने के बाद लूका ने एक विशिष्ट उदाहरण दिया:

> और यूसुफ नाम, कुप्रुस का एक लेवी था,[19] जिसका नाम प्रेरितों ने बर-नबा अर्थात् (शान्ति का पुत्र) रखा था, उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपये[20] लाकर प्रेरितों के पांवों पर[21] रख दिए (आयतें 36, 37)।

प्रेरितों की पुस्तक में मुज़्य ''लघु पात्र'' बर-नबा के साथ यह हमारा परिचय है। बर-नबा का उल्लेख प्रेरितों के काम की पुस्तक में कम से कम पच्चीस बार और अन्य पत्रियों में पांच बार और मिलता है।

लूका ने अन्यजातियों में से अपने पाठकों को ''बर-नबा'' का अर्थ समझाया। ''बर'' का अर्थ है ''का पुत्र।''[22] ''बर-नबा'' का अर्थ है ''प्रोत्साहन का पुत्र'' (अथवा ''सांत्वना का पुत्र'' अथवा ''शान्ति का पुत्र''[23] अथवा ''उपदेश का पुत्र''[24])। शायद यूसुफ को बरनबास इसलिए कहा जाता था क्योंकि वह व्यावहारिक *प्रचार* के लिए, कलीसिया को सिखाने के लिए कि इसे जैसा होना चाहिए वैसी बने, बहुत यत्न से काम करने में सबसे आगे था। उसके इस प्रकार प्रचार करने का एक उदाहरण हमारे पास है (11:23, 24)। परन्तु, अधिकांश समय वह हमें एक-एक को उत्साहित और दृढ़ करते ही मिलता है। मेरे ख़्याल में प्रेरितों ने उसका नाम बरनबा या बरनबास इसलिए रखा क्योंकि उन्होंने देखा कि वह *हमेशा* लोगों को उत्साहित करता और उनका हौसला बढ़ाता रहता था। उसका नाम किसी भी कारण से रखा गया हो, यह तय है कि आज कलीसिया को और ''प्रोत्साहन के पुत्रों'' की आवश्यकता है!

लूका ने उदारता के इस विशिष्ट उदाहरण को ही क्यों चुना? शायद उसने उस व्यक्ति का परिचय सरल ढंग से कराने के अवसर का इस्तेमाल किया जिसे पुस्तक में विशेष स्थान प्राप्त होना था। दूसरी ओर, शायद बरनबा(स) को ऐसा दान मिला था, जिसने उसे औरों से अलग कर दिया। लूका ने यह कहकर कि वह लेवी था, एक विशेष बात पर ध्यान दिलाया। जब इस्राएल के आरम्भिक दिनों में कबीलों में भूमि बांटी जा रही थी, तो लेवी के गोत्र को कई नगरों के साथ चराइयों को छोड़कर और कुछ नहीं मिला था (उनका निर्वाह मन्दिर से होना था)।[25] शायद लेवी होने के कारण, बरनबास के लिए अपनी भूमि सुरक्षित रखना कठिन हो[26]- उसके लिए छोड़ना भी कठिन होगा। लूका द्वारा बरनबा(स) का विशेष उल्लेख करने का कारण कुछ भी हो, परन्तु जो कुछ भी हुआ उसमें उसके प्रेम के दान का बाद में मिलने वाले दान की तुलना में, बहुत अन्तर है।[27]

छिपी हुई चट्टानें (5:1-11)

कलीसिया प्रशंसा पाती, बढ़ती और संगठित होती जा रही थी। शैतान के लिए इसे सहन करना कठिन हो रहा था! वह इसमें फूट डालना, इसे बदनाम करना, और घटाना चाहता था! वह बाहर से अत्याचार के द्वारा कलीसिया को नाश करने की कोशिश कर चुका था। अब उसने इसके अन्दर से अभिलाषा के द्वारा इसका नाश करने का यत्न करना था।

> और[28] हनन्याह नाम का एक मनुष्य और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ ज़ूमि बेची।[29]
> और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी,
> और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पांवों के आगे रख दिया (आयतें 1, 2)।

कलीसिया में पहला लिखित पाप हनन्याह और सफीरा का ही है। ऐसा नहीं कि यह पहला पाप था- हर कोई पाप करता है (रोमियों 3:23)। परन्तु पुस्तक में दर्ज किया जाने वाला कलीसिया में यह पहला पाप है।

पुरुष का नाम हनन्याह था, जिसका अर्थ है ''यहोवा अनुग्रहकारी रहा है।'' उसे परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में बताया जा चुका था; शीघ्र ही उसने परमेश्वर के न्याय को भी जान लेना था। उसकी पत्नी का नाम सफीरा था। जिसका अरामी भाषा में अर्थ है ''सुन्दर।'' उसका चेहरा सुन्दर रहा होगा, परन्तु उसका मन सुन्दर नहीं था।

उनके पाप को समझना आवश्यक है। उनका पाप सज़्पत्ति का होना या उस सज़्पत्ति को बेचना नहीं था (या यदि वे इसे बेचना चाहते तो लाभ के लिए बेचना भी नहीं था)। उनका पाप यह भी नहीं था कि उन्होंने कुछ धन अपने पास रखने का निर्णय लिया। आयत 4 में इसे और स्पष्ट किया गया है। बल्कि, उनका पाप यह था कि उन्होंने बिकी हुई सज़्पत्ति से प्राप्त धन का *कुछ भाग* दिया, और कहा कि उन्होंने वह सज़्पति *इतने में ही* बेची थी (आयतें 3, 8)।

मूलत:, यूनानी लोग मंच पर अभिनेता के लिए ''कपटी'' शब्द का प्रयोग करते थे।[30] उन दिनों अभिनेता लोग मुखौटा पहना करते थे: कॉमेडी दर्शाने के लिए हंसमुख मुखौटे और त्रासदी दर्शाने के लिए भौं चढ़े मुखौटे होते थे। समय बीतने के साथ भूमिका निभाने वाले को, जो अपनी वास्तविकता को छिपाने के लिए ''मुखौटा'' पहनता अर्थात ऐसा होने का ढोंग करता जो वास्तव में वह होता नहीं था, ''कपटी'' कहा जाने लगा। (मत्ती 23 में बताया गया है कि प्रभु कपटियों के बारे में क्या सोचता है।)

केवल इसलिए कि किसी को जैसा होना चाहिए था, उसका वैसा न बन सकना कपट नहीं है; हम में से वैसा कोई भी नहीं है जैसा उसे होना चाहिए। कपट तो *जानबूझ कर* किया गया धोखा है। हनन्याह और सफीरा ने धोखा देने की योजना बनाई। उन दोनों ने यह योजना बनाने का ''एका किया'' था (आयत 9)। कपट जानबूझकर किया गया पाप है (इब्रानियों 10:26-29)।

लूका ने यह नहीं कहा कि धोखा देने की योजना बनाने के लिए उन्हें किस बात ने प्रेरित किया, परन्तु हम इस बारे में अनुमान लगा सकते हैं।[31] बरनबास को उसके दान के कारण विशेष पहचान मिल गयी थी (हो सकता है कि उसके दान देने के कारण ही उसका नाम ''बरनबास'' रखा गया हो)। हनन्याह और सफीरा ने अपने लिए वैसी ही खुशामद की इच्छा की होगी। सर रिचर्ड स्टील ने टिप्पणी की, ''मन की सभी बीमारियों में से, चापलूसी के प्रेम से अधिक संक्रामक या विनाशकारी और कोई भी नहीं है।''[31]

जब दोनों ने भू-सज़्पत्ति बेचने का निर्णय लिया, तो प्रशंसा पाने की उनकी इच्छा धन से प्रेम के साथ टकरा गई (1 तीमुथियुस 6:10)। सज़्भवत: उस भू-सज़्पत्ति से अच्छी कीमत मिल गई थी और उनका मन लालची हो गया कि सज़्पूर्ण राशि दान में न दी जाए। उन्होंने इस प्रश्न पर विचार किया: बरनबास के जैसा बलिदान किए बिना उन्हें वैसी प्रशंसा कैसे मिल सकती है? उनका अपना ही उत्तर था कि प्राप्त धन के बारे में झूठ बोला जाए। ओलिवर होल्म्स ने एक बार कहा, ''पाप के पास बहुत से औज़ार हैं, परन्तु झूठ वह दस्ता है जो उन में से हर एक में फिट बैठता है।''

इस कारण हनन्याह उस दिन सुबह ही चल पड़ा, उसका धन का थैला उभरा हुआ

था।[32] (किसी को खबर नहीं थी कि उसके घर में सिक्कों की एक और भी ढेरी पड़ी हुई है!) भीड़ के सामने सिक्के उंडेलते हुए लोगों की फुसफुसाहट का अनुमान लगाकर वह उनकी तरफ देखकर मुस्कराया। हो सकता है वे उसे ''बलिदान का पुत्र'' या ''उदारता का स्वामी'' नाम दें!

प्रेरितों के पास पहुंचकर[33] उसने अपनी योजना को अन्तिम रूप दिया। हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि उसने क्या कहा होगा, परन्तु उसने सम्भवत: इस तरह का अभिनय किया होगा: ''मुझे और सफीरा को परमेश्वर इतने वर्षों से भौतिक वस्तुओं से आशीषित कर रहा है। उन आशिषों को अपने कमज़ोर भाइयों तथा बहनों के साथ बांटने में हमें बड़ा आनन्द मिल रहा है। हमारे परिवार के पास भू-सम्पत्ति का एक टुकड़ा बहुत अच्छे स्थान पर था, परन्तु... (प्रभाव देने के लिए रुकता है) कल हमने उसे बेच दिया।'' विनम्रतापूर्वक एक भक्त की तरह उसने वह धन पतरस के पैरों में, यह कहते हुए रख दिया, ''और उससे जो रुपये मिले, *ये* हैं।'' फिर उसने उस राशि के बारे में घोषणा की जो वह लेकर आया था और विनय भाव से प्रतिक्रिया जानने के लिए पीछे खड़ा हो गया, ''यह तो कुछ भी नहीं, सचमुच, कुछ भी नहीं था यह।'' इसके विपरीत, उसका कपट सामने आने पर उसे अपने जीवन का झटका लगा!

> परन्तु पतरस ने कहा, ''हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े? जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से *झूठ* बोला'' (आयतें 3, 4)।

1:24 में वर्णन किया गया था कि परमेश्वर ''सब के मन जानता है'' (तु. इब्रानियों 4:13)। यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के दिनों में यह माना जाता था कि यीशु लोगों के मनों में आने वाले विचार भी जान लेता था (मरकुस 2:8)। अब, परमेश्वर और मसीह के आत्मा से, पतरस ने हनन्याह के मन की बुराई[34] – और उस छिपी हुई चट्टान को अनावृत कर दिया, जिससे कलीसिया को ख़तरा था।

पतरस के कथन के बारे में अनेक तथ्य हमें आकर्षित करते हैं। पहला, पतरस ने संकेत दिया कि शैतान[35] को अपने मन में ''डालने'' की अनुमति देकर हनन्याह ने पाप किया। परमेश्वर या पवित्र आत्मा के किसी के मन में आने के बारे में बात करते समय वाक्यांश ''उसके मन में डाली'' को हम पहले देख चुके हैं- और हमने टिप्पणी की थी कि यह वाक्यांश किसी के परमेश्वर या पवित्र आत्मा ''के नियन्त्रण में'' होने की बात है। जिस प्रकार परमेश्वर मनुष्य के मन में डाल सकता है, वैसे ही शैतान भी मनुष्य के मन में डाल सकता है। इस वाक्यांश का अर्थ यहां भी ''के नियन्त्रण में'' ही है। हनन्याह ने अपने विचारों और अपने कामों को उसके नियन्त्रण में दे दिया। परन्तु, शैतान ने ऐसा हनन्याह की इच्छा के विरुद्ध नहीं किया। पतरस ने हनन्याह को बताया, ''*तू ने* यह बात ... मन में क्यों

विचारी?'' शैतान ने हनन्याह को भरमाया हो सकता है, परन्तु अन्त में तो अपने किए के लिए हनन्याह ही ज़िम्मेदार था![36] शैतान ने हनन्याह के कान में कुछ यूं कहा होगा, ''बरनबास'' की तरह ही तेरा नाम भी यदि सब के होंठों पर हो तो कितना अच्छा हो? मैं तुझें बता सकता हूं कि यह कैसे हो सकता है!'' यदि हनन्याह ने दृढ़ता से उत्तर दिया होता, ''क्षमा करना, मुझे कोई दिलचस्पी नहीं!'' तो शैतान भाग जाता (याकूब 1:7)। इसके विपरीत, अचम्भित हनन्याह ने अपने मन के द्वार को खोलते हुए कहा, ''मुझे अच्छी तरह बताओ!'' फिर शैतान अन्दर आया और उसके मन में समा गया। सचेत रहें, ताकि आपके मन में शैतान को पांव रखने की जगह न मिले![37]

दूसरी बात जो पतरस के वाक्य में हमारे लिए है, वह यह है कि उसने भू-सज़्पत्ति बेचने से पहले और बिकने के बाद हनन्याह के लिए विकल्प बताए। सज़्पत्ति उसी के ''अधिकार में'' थी; हनन्याह पाप किए बिना ज़ी अपनी इच्छा के अनुसार उसका उपयोग कर सकता था! उसे भूमि बेचने की *आवश्यकता* नहीं थी और जब बेच ही दी, तो उससे प्राप्त सारा धन देना *आवश्यक* नहीं था। मैं फिर ज़ोर देकर कहता हूं कि हनन्याह और सफीरा का पाप यह नहीं था कि उन्होंने कुछ धन अपने लिए रख छोड़ा, बल्कि उनका पाप यह था कि धन का कुछ भाग रखने के बाद उन्होंने *झूठ* कहा कि वे सारा धन ले आए थे।

तीसरा, पतरस ने हनन्याह पर *झूठ बोलने* का आरोप लगाया। शैतान तो ''झूठा है, वरन झूठ का पिता है'' (यूहन्ना 8:44)। जब शैतान किसी के हृदय में आ जाए, तो झूठ उसमें से स्वाभाविक ही निकलेगा। परन्तु, यहां सब से बड़ी बात यह है कि हनन्याह ने परमेश्वर के सामने झूठ बोला। आयत 3 में पतरस ने कहा कि हनन्याह ने पवित्र आत्मा से झूठ बोला, और आयत 4 में उसने ज़ोर देकर कहा, ''तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला।'' यहां पर अक्षरलोप[38] हो सकता है और नहीं भी – ''तू ने केवल मनुष्यों से ही झूठ *नहीं* बोला, बल्कि *परमेश्वर* से *भी* बोला है'' परन्तु यहां इस बात पर ज़ोर दिया है कि हनन्याह ने *परमेश्वर* के साथ झूठ बोला।[39] यदि हनन्याह के मन में केवल ''झूठ'' शब्द ही प्रविष्ट होता, तो वह यही सोचता कि उसने प्रेरितों ... और कलीसिया के साथ ही झूठ बोला। परन्तु, प्रेरित तो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे और कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर थी। हनन्याह ने उनसे झूठ बोलकर स्वयं परमेश्वर के साथ झूठ बोला!

बुनियादी तौर पर सब प्रकार का पाप परमेश्वर के विरुद्ध है। इससे लोगों पर प्रभाव पड़े या न पड़े; परन्तु, अपने मूल से ही, पाप उस सर्वशक्तिमान के प्रति विद्रोह है![40] इस विचार को अपने मन से बाहर रख लें। कुछ देर बाद जब हम हनन्याह और सफीरा के पाप के परिणाम पर ध्यान देंगे तो उस समय यह आपकी सहायता करेगा।

हनन्याह को कहे पतरस के शब्दों पर एक और टिप्पणी होनी चाहिए: पतरस ने हनन्याह को कोई शाप नहीं दिया। हनन्याह के पाप के प्रति पतरस स्पष्ट था, परन्तु परतस के शब्दों में कहीं ज़ी मृत्यु-दण्ड की बात नहीं है। उसके बोलने के बाद जो कुछ वहां हुआ, उससे पतरस स्वयं भी लोगों की तरह ही स्तब्ध रह गया था।

> ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए; और सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया। फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया (आयतें 5, 6)।

इन आयतों तक पहुंचने पर, बहुत से टीकाकार अपने दांत पीसने, अपने कपड़े फाड़ने और बाल नोचने लगते हैं।[41] कुछ चिल्लाते हैं; ''ऐसा कभी नहीं हुआ! यह कहानी तो सदस्यों को सीधा रखने के लिए बाद में गढ़ी गई!'' कई लोग ऐलान करते हैं, ''हो सकता है कि कुछ हुआ हो, परन्तु इसे और गूढ़ अर्थ देने के लिए कहानी को बाद में संवारा गया!'' कई लोगों का मत है कि हनन्याह मौके पर ही मर गया होगा, परन्तु ऐसा उसे पतरस की स्पष्टवादिता के कारण हृदयाघात के कारण हुआ होगा। लगभग सभी पतरस को कोसते हैं। ''उसमें अज़ी मसीह का आत्मा पूरी तरह नहीं आया था!'' कोई आरोप लगाता है। कोई और पतरस के बचाव में कहता है (?): ''हमें स्मरण रखना चाहिए कि चरवाही करने का उसका नया-नया काम था, इस घटना ने उसे सिखा दिया कि झुण्ड के साथ व्यवहार में *नम्रता* से पेश आना चाहिए!''

हनन्याह के साथ जो कुछ हुआ उससे कई बातें समझ में आ जानी चाहिए:

(1) बिल्कुल वैसा ही हुआ जैसा लूका ने कहा! यदि ऐसा नहीं हुआ तो लूका की गवाही विश्वसनीय नहीं थी और अपनी किताब में जो कुछ उसने कहा, हम उन में से किसी बात पर भरोसा नहीं कर सकते!

(2) पतरस ने जो कुछ भी किया, वह *परमेश्वर के पवित्र आत्मा* की अगुआई से किया! (पतरस ने कई बार गलतियां कीं [गलतियों 2:11-13], परन्तु तब नहीं जब वह सीधे पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में था।) 5:1-11 का मुज्य पात्र हनन्याह या सफीरा या पतरस नहीं बल्कि *पवित्र आत्मा* है!

(3) पतरस ने परमेश्वर के *प्रतिनिधि* के रूप में बात की। परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने उसके द्वारा प्रकट किया कि हनन्याह ने क्या किया। पतरस ने स्पष्ट किया कि हनन्याह का पाप प्रेरितों के नहीं, बल्कि *परमेश्वर के विरुद्ध* था।

(4) जो कुछ हुआ वह *परमेश्वर की ओर से* न्याय था।[42] वाक्यांश ''प्राण छोड़ दिए'' को यूनानी के मिश्रित शब्द से अनुवाद किया गया है जो ''प्राण'' के लिए शब्द को उपसर्ग ''बाहर'' से मिलाता है। यह असामान्य शब्द नए नियम में एक ही बार 12:23 में मिलता है,[43] जो हेरोदेस पर पड़ने वाले परमेश्वर के न्याय के बारे में है: ''*प्रभु* के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त *उसे मारा,* क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा न की और वह कीड़े पड़के *मर गया*''। ''मर गया'' उसी यूनानी शब्द से लिया गया है जिससे 5:5 में ''प्राण छोड़ दिए।'' ध्यान दें कि हनन्याह के मरने के बाद, ''सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया।'' क्या उसे दिल का दौरा पड़ने के कारण सब भयभीत हो गए थे? नहीं। हनन्याह की मृत्यु के कारण वे *परमेश्वर* से डरने लगे थे![44] (जो लोग यह सोचते हैं कि वहां घटने वाली घटना ''चरित्र की'' थी उन्हें लगता कि परमेश्वर भूल चुका है कि उसने लैव्यव्यवस्था 10 में नादाब और अबीहू और

2 शमूएल 6 में उज्जा के साथ क्या किया था, बताने की आवश्यकता नहीं कि बाद में प्रेरितों 12 में उसने हेरोदेस के साथ क्या किया!)

बहुत कुछ ऐसा है जो मुझे नहीं पता कि वहां और क्या-क्या हुआ होगा। मुझे नहीं मालूम कि हनन्याह को मन फिराने का अवसर मिला या नहीं।[45] मैं ठीक-ठीक नहीं जानता कि परमेश्वर ने हनन्याह और उसकी पत्नी को *कैसे* मारा होगा।[46] परन्तु, मैं यह जानता हूं कि परमेश्वर ने इस घटना को *तब* के मसीहियों और *अब* के (जिसमें मैं और आप आते हैं) मसीहियों को शिक्षा देने के लिए चुना।

समय-समय पर मनुष्य के साथ व्यवहार में, परमेश्वर ने ज़ोर दिया है कि *वह पाप को बड़ी ग भीरता से लेता है*। आमतौर पर ऐसा तब हुआ जब उसके लोग उसके साथ सम्बन्ध में नए चरण में प्रवेश कर रहे थे। इसी कारण उसने नादाब और अबीहू को तब मारा जब याजकाई स्थापित हो रही थी (लैव्यव्यवस्था 10), और उसने उज्जा को तब मारा जब दाऊद की अगुआई में इस्राएल परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नवीन कर रहा था (2 शमूएल 6)।

शायद प्रेरितों 5 की कहानी के समान ही आकान की कहानी है जब इस्राएल की संतान प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश कर रही थी। 5:2 में प्रयुक्त शब्द ''रख छोड़ा'' यहोशू 7:1 के यूनानी अनुवाद में आकान के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस्राएल की संतान ने सबसे पहले यरीहो नगर पर ही कब्ज़ा करना था। यहोशू ने सिपाहियों को बताया था कि सभी कीमती धातुएं प्रभु के भण्डार में जाएंगी। जब वे नगर पर कब्ज़ा कर रहे थे, तो आकान को बहुत सी सुन्दर तथा कीमती वस्तुएं मिलीं। उसे मिली वस्तुओं को जमा करवाने की जब उसकी बारी आई, तो उसे लालच हो गया और उसने उनमें से कुछ को ''रख लिया,'' सो उसने झूठ बोलकर कहा कि जो कुछ उसने लौटाया, उसके पास केवल वही था। उसके बाद तो विपत्ति आ पड़ी। आकान के धोखे के कारण परमेश्वर की ओर से इस्राएल पर संकट आ पड़ा। इस कहानी का अन्त आकान और उसकी पूरी सम्पत्ति के नाश के साथ हुआ।[47] परमेश्वर के लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश की दहलीज़ पर थे और वह उन्हें बताना चाहता था कि वह पाप को बड़ी गम्भीरता से लेता है! चौदह सौ वर्षों बाद, जब परमेश्वर के नये लोग मसीही युग की दहलीज़ पर थे तो वह उन्हें भी वही सच्चाई समझा देना चाहता था!

प्रेरितों 5 के दु:खांत का दृश्य इन शब्दों के साथ समाप्त होता है: ''फिर जवानों ने[48] उठकर उसकी अर्थी बनाई[49] और बाहर ले जाकर गाड़ दिया'' (आयत 6)। वेदी से निकली आग में भस्म होने के बाद किसी औपचारिकता का न होना[50] और रूखापन हमें नादाब और अबीहू के गाड़े जाने का स्मरण कराता है: ''वे निकट जाकर उनको अंगरखों सहित उठाकर छावनी के बाहर ले गए'' (लैव्यव्यवस्था 10:5)।[51] कइयों का सुझाव है कि हनन्याह को गाड़ने के लिए इतनी जल्दी इसलिए की गई क्योंकि यरूशलेम नगर में मुर्दे को उसी दिन गाड़ा जाता था। परन्तु यदि गाड़ने में जल्दी होती तो भी इसमें *इतनी* जल्दी करने की आवश्यकता नहीं थी। उनके गाड़े जाने के ढंग से लगता है जैसे यह शिक्षा देने के लिए हो। किसी औपचारिकता के बिना गाड़ना तो जानवर को गाड़ने के समान था (यिर्मयाह 22:19)।

दु:खांत समाप्त नहीं हुआ था। दृश्य II तो अभी आना था। इस षड्यन्त्र में सफीरा भी शामिल थी। ''लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई'' (आयत 7)। सफीरा, हनन्याह के साथ क्यों नहीं आई थी? सम्भवत: परिवार का मुखिया होने के कारण सारा धन हनन्याह ने ही रखा होगा, उसकी योजना होगी कि वापस आने पर वह सफीरा को सौदे का सारा विवरण बता देगा। जब वह जल्दी नहीं लौटा तो वह सोचने लगी होगी कि उनके दान के लिए वहां उत्सव सा माहौल होगा जिसके कारण उसे देर हो गई। परन्तु, अधिक समय होने पर, उसे चिन्ता होने लगी (जैसे कि पत्नियों को होती ही है) और वह देखने आई कि उसके पति को आने में देरी क्यों हुई।[52]

तीन घंटे बीतने पर भी उसे यह पता क्यों नहीं चला कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है? स्पष्ट है कि पतरस ने वहां उपस्थित लोगों को इस घटना के बारे में किसी को न बताने की आज्ञा दी होगी[53] और वे इस घटना से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने बिल्कुल वही किया जो उसने कहा था![54] शायद पतरस ने सभी को सफीरा को यह बात बताने से मना कर दिया हो ताकि, उसे भूल सुधारने का पूरा अवसर दिया जाए और उसकी सुनवाई निष्पक्ष हो।[55] कुछ भी हो, उसे आश्चर्य तो हुआ ही होगा कि उसके पति को क्या हुआ, भीतर प्रवेश करते हुए उसे यह आभास भी न था कि उसके साथ क्या होने वाला है।

उसने वहां पहुंचकर जहां वे इकट्ठे थे, क्या कहा? उसने कुछ ऐसे कहा होगा: ''आप में से किसी ने मेरे पति को देखा है? तीन घंटे हो गए हनन्याह को घर से निकले, और अब मुझे चिन्ता होने लगी है।'' उसने कुछ भी कहा हो, पतरस ने उसकी बातों और उसके व्यवहार के अनुरूप उत्तर नहीं दिया। ''तब पतरस ने उसे कहा,[56] मुझे बता क्या तुमने वह भूमि[57] इतने में ही बेची थी?''[58] (आयत 8क)। उसने धन के उस ढेर की ओर इशारा किया होगा, जो अभी भी वहीं भूमि पर पड़ा हुआ था।

उसके इस प्रश्न ने सफीरा को कितने आश्चर्य में डाल दिया होगा! वह तो अपने पति को ढूंढने आई थी और यहां उनके द्वारा दिए दान के विषय में उससे पूछताछ की जा रही है! मेरी कल्पना के अनुसार उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा होगा। वह अवश्य ही सोच रही होगी, ''कुछ तो गड़बड़ है!'' शायद उसने चारों तरफ देखकर कुछ अनुमान लगाना चाहा हो कि यह सब क्या हो रहा था, परन्तु वह अपनी ओर ताकते लोगों के चेहरों को समझ नहीं पाई। उसे मन फिराने और अपनी हेराफेरी का अंगीकार करने का अवसर दिया गया था (8:22; 1 यूहन्ना 1:9), परन्तु आत्माभिमान के कारण वह अपने पाप को मान न सकी। उसने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, ''हां, इतने में ही'' (आयत 8ख)।

पतरस ने अवश्य ही दु:खी होकर अपना सिर हिलाया होगा जब उसने कहा, ''यह क्या बात है, कि तुम दोनों ने प्रभु के आत्मा की परीक्षा[59] के लिए एका किया?''[60] (आयत 9क)। मेरा विश्वास है कि हनन्याह और सफीरा का पवित्र आत्मा को ''परीक्षा'' में डालने का कोई इरादा नहीं था। उनका उद्देश्य तो सम्मान, आलिंगन और पीठ पर कुछ थपकियां लेने का था। परन्तु पतरस ने सफीरा को बताना चाहा कि उन्होंने अपने इस व्यवहार से वास्तव में ''प्रभु के आत्मा को परीक्षा'' में डाला था!

परमेश्वर की परीक्षा लेने का अर्थ समझने के लिए, उजाड़ में उन इस्राएलियों पर ध्यान दीजिए जब वे बार-बार अपनी लालसा, अवज्ञा, ढीठपन से परमेश्वर के धैर्य की परीक्षा करते थे (निर्गमन 17:2; व्यवस्थाविवरण 6:16)। घर में आ जाएं, एक ज़िद्दी बच्चे के बारे में विचार करें, जो अपने माता पिता के धैर्य की परीक्षा लेता है!

परमेश्वर को परीक्षा में डालने का अर्थ परमेश्वर को परज़ना है अर्थात यह देखना कि आप कितनी दूर जा सकते हैं, यह देखना कि जो कुछ उसने कहा क्या वह उसे पूरा भी करेगा। जब शैतान ने यीशु की परीक्षा ली, तो शैतान ने उसे सुझाव दिया था कि वह अपने आप को मन्दिर के कंगूरे से नीचे गिरा दे और परमेश्वर के स्वर्गदूत उसे हाथों हाथ उठा लेंगे। यीशु ने वहां व्यवस्थाविवरण 6:16 से उद्धृत करते हुए कहा था कि ''तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा *न* कर'' (मत्ती 4:7)। यीशु को पता था कि परमेश्वर के वायदों के लिए उसकी परीक्षा लेना उस पर भरोसे में कमी को दिखाता है।[61]

पतरस के शब्दों में ज़ोर दिया गया है कि हनन्याह और सफीरा का पाप कितना गज़ीर था और यह क्यों आवश्यक था कि उनका पाप उजागर हो और उन्हें उसका दण्ड मिले। टीकाकार लुइस फोस्टर ने NIV स्टडी बाइबल में टिप्पणी की:

> यदि पाप के इस कृत्य के घोर परिणाम न होते, तो उस धोखे के बारे में अन्य विश्वासियों को पता चलने पर परिणाम भयंकर होते।[62] न केवल यह संकेत जाता कि बेईमानी फलवन्त होती है, बल्कि यह निष्कर्ष निकलता कि आत्मा को कोई भी धोखा दे सकता है। यह बात अच्छी तरह से समझाने के लिए कि परमेश्वर ऐसे कपट तथा धोखे को सहन नहीं करेगा, दिशा निर्धारित होनी बहुत आवश्यक थी।

हनन्याह और सफीरा का झूठ सचमुच बहुत बड़ी छिपी हुई चट्टान थी, जिससे शिशु कलीसिया मुश्किल में पड़ सकती थी। यदि वे धोज़ा देने में सफल हो जाते, तो आत्मा की अगुआई में चलने वाले प्रेरितों की विश्वसनीयता और अधिकार पर प्रश्न चिह्न लग जाता और कलीसिया प्रभावशाली नेतृत्व से विहीन हो जाती!

परन्तु, परमेश्वर ने यह सुनिश्चित किया कि उनकी चालाकी चलने *न* पाए। सफीरा ने अपने पाप को अंगीकार करने का अवसर गंवा दिया था। अफसोस के साथ, पतरस ने उसे कहा, ''देख तेरे पति के गाड़ने वाले द्वार पर ही खड़े हैं,[63] और तुझे भी बाहर ले जाएंगे'' (आयत 9ख)। एक के बाद एक झटका! उसका पति मरा ही नहीं, बल्कि उसे गाड़ भी दिया गया था; और वही भयानक दण्ड उसे भी मिलने वाला था![64]

इस बार पतरस को मालूम *था* कि क्या कहना है (आखिर, उस पर पिछले तीन घण्टे पहले बीती घटना का प्रभाव जो था[65]), परन्तु मैं फिर ज़ोर देकर कहूंगा कि इस बार भी सफीरा की मृत्यु पतरस के नहीं, बल्कि परमेश्वर के कहने से हुई।

> तब वह तुरन्त उसके पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए:[66] और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया।

और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सुनने वालों पर, बड़ा भय छा गया (आयतें 10, 11)।

लूका ने ज़ोर देकर कहा कि ''इन बातों के सुनने वालों पर बड़ा ज़य छा गया।'' वास्तव में, लूका ने, भय के बारे में *दो बार* लिखा है कि कहीं उसके पाठक चूक न जाएं (आयतें 5, 11)! परमेश्वर पाप को बड़ी गम्भीरता से लेता है और मनुष्यों को भी इसका अहसास होना आवश्यक है! ''धोखा न खाओ,'' पौलुस ने कहा। ''तुम परमेश्वर को मूर्ख *नहीं बना सकते*'' (गलतियों 6:7; फिलिप्स ट्रांसलेशन)। ऐसा करने के लिए की गई कोई भी कोशिश भस्म कर सकती है!

लूका ने सब पर छाने वाले भय के बारे में लिखते हुए एक ऐसा महत्वपूर्ण शब्द बीच में लिखा, जो इस पुस्तक में अभी तक हमें नहीं मिला था:[67] वह शब्द है ''कलीसिया।''[68] ''कलीसिया'' का अनुवाद यूनानी मिश्रित शब्द *इकलीसिया* से किया गया है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''बुलाए हुए।''[69] यूनानी लोगों में किसी सभा (किसी भी प्रकार की सभा जिसमें लोगों को इकट्ठा किया जाता था: देखिए 19:32, 39, 41) को *इकलीसिया* कहा जा सकता था। परन्तु, मसीहियत में, *इकलीसिया* को विशेष अर्थ प्राप्त हुआ: परमेश्वर के विशेष लोग जिन्हें संसार में से यीशु मसीह के साथ नए सम्बन्ध के लिए बुलाया गया।[70] प्रेरितों की पुस्तक में इस शब्द को कई बार परमेश्वर के *सभी* बुलाए हुए लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया (20:28) और कई बार किसी स्थान में बुलाए हुओं के लिए (अर्थात, किसी मण्डली के लिए; देखिए 8:1; 11:22; 13:1)।[71]

यहां पर ''कलीसिया'' शब्द को लूका द्वारा यह ज़ोर देने के लिए डाला गया कि जो कुछ हुआ वह केवल बाहर वालों के लिए नसीहत ही नहीं बना; बल्कि विशेष रूप से कलीसिया के अन्दर भी वह एक उदाहरण बन गया! क्या हम में से कोई जो कलीसिया का सदस्य है बिना कंपकंपी के हनन्याह और सफीरा की अचिह्नित कब्रें देख सकता है? आखिर, परमेश्वर ने उस जोड़ी को तथाकथित ''बड़े'' पापों के लिए तो नहीं मारा था। जहां तक हमें पता है कि उन्होंने हत्या, चोरी, व्यभिचार, मतवालापन या नशे की लत इत्यादि का तो कोई पाप नहीं किया था। उन्होंने कलीसिया[72] में झूठ केवल इसलिए बोला था ताकि लोग उन्हें उससे अधिक अच्छा जानें जितने वे वास्तव में थे। क्या हम कभी ऐसा करते हैं? क्या हमने कभी किसी से कहा है, ''मैं आपके लिए प्रार्थना करूंगा'' – इसलिए नहीं कि हमने उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने की योजना बनाई थी बल्कि इसलिए कि हम अपने आप को उससे अधिक आत्मिक दिखाना चाहते हैं जितने कि वास्तव में हम हैं नहीं? क्या हम में से किसी ने कभी अस्पताल में दाखिल होने वाले व्यक्ति से यह कहा है, ''आप घर आ गए हैं? मैंने तो सोचा था कि आपको देखने जाऊंगा!'' – इसलिए नहीं कि हमने सचमुच उस व्यक्ति से मिलने की योजना बनाई थी, बल्कि इसलिए कि हम अपने आप को इतना अच्छा दिखाने की कोशिश करते हैं, जितने कि वास्तव में हम हैं नहीं?

हनन्याह और सफीरा का पाप *यह* था कि उन्होंने अपने *चन्दे* के बारे में झूठ बोला था।

कलीसिया के लिए परमेश्वर का स्थायी वित्तीय प्रबन्ध यह है कि हम में से हर एक हर्ष से और उदारता से सप्ताह के पहले दिन अपनी ''आमदनी'' के अनुसार चन्दा दे (1 कुरिन्थियों 16:2; 2 कुरिन्थियों 9:6-13)। थैली में चन्दा डाल कर, क्या हम यह बता रहे हैं कि, ''हम उतना ही दे रहे हैं जितना हमें देना चाहिए; हम अपनी आमदनी के अनुसार ही दे रहे हैं?'' यदि ऐसा नहीं तो क्या है? क्या हम में से कोई अपने चन्दे के बारे में झूठ बोलने का दोषी है।[73]

इसने तो हमें बड़े गम्भीर प्रश्न में डाल दिया: यदि परमेश्वर कलीसिया में पाप के साथ वैसा ही बर्ताव करे जैसा उसने प्रेरितों 5 में किया? यदि ऐसा होता तो प्रार्थना भवन के तहखाने में मुर्दाघर अवश्य बनाना पड़ता, कलीसिया में मुर्दों को गाड़ने के लिए कर्मचारी रखने पड़ते और गाड़ने वालों की सेवकाई के लिए अतिरिक्त डीकनों (सेवकों) को नियुक्त करना पड़ता!

आज परमेश्वर पाप के साथ वैसा बर्ताव न भी करे जैसा उसने हनन्याह और सफीरा के मामले में किया[74] परन्तु इससे बहककर हमें यह नहीं सोच लेना चाहिए कि परमेश्वर पाप के प्रति अब कम गम्भीर है!

> क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, कि ''पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा।'' और फिर यह, कि ''प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।'' जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है (इब्रानियों 10:30, 31)।
>
> इस कारण ... हम भक्ति और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिस से वह प्रसन्न होता है; क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है (इब्रानियों 12:28, 29)।

आगे पूरी गति से! (5:12-14)

हनन्याह और सफीरा की कहानी को छोड़ने से पहले कलीसिया के अनुशासन के बारे में कम से कम हमें कुछ तो कहना चाहिए। हाल के वर्षों में काफ़ी प्रचारित हुए मुकद्दमों[75] के कारण कलीसिया के कुछ नेता यीशु की आज्ञानुसार अनुशासन का पालन करने में संकोच करने लगे हैं। हनन्याह और सफीरा की घटना कलीसिया में अनुशासन की *आवश्यकता* पर बल देती है।

मैं मानता हूं कि कलीसिया में अनुशासन के लिए प्रेरितों 5 कोई आदर्श घटना नहीं है। प्रेरितों 5 में परमेश्वर ने काम किया; कलीसिया में अनुशासन के लिए मण्डली को काम करना है (मत्ती 18:15-17; 1 कुरिन्थियों 5:4, 5)। प्रेरितों 5 में हनन्याह और सफीरा को इस जीवन से वंचित होना पड़ा था; कलीसिया के अनुशासन में दण्ड पाने वाला हमारी संगति से वंचित होता है।[76] परन्तु, प्रेरितों 5 और कलीसिया के अनुशासन में बहुत सी समानताएं देखी जा सकती हैं: कलीसिया में पाप मसीह के कार्य को हानि पहुंचाता है। यदि

पाप का सामना तुरन्त न किया जाए तो वह और फैल सकता है (और फैलेगा)। पश्चात्ताप न करने वालों को केवल उनके अपने बचाव के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण कलीसिया के लिए अनुशासित करना आवश्यक है।

मैं अन्तिम विचार को फिर से ज़ोर देकर कहता हूं: अनुशासन का मुख्य उद्देश्य तो भटक गए लोगों को सुधारना है (1 कुरिन्थियों 5:5), परन्तु यदि ऐसा न हो पाए तो? हनन्याह और सफीरा के मामले में नहीं हुआ। क्या फिर भी कलीसिया के अनुशासन का कोई औचित्य रह जाता है? हां, क्योंकि इससे देह में से पाप को निकाला जा सकता है और हम संसार को बता सकते हैं कि हम कहां खड़े हैं (1 कुरिन्थियों 5:1, 6, 7)!

यह संयोग नहीं है कि कलीसिया के तेज़ी से विस्तार के तुरन्त पहले अनुशासन की कहानी है। जैसे आकान को दण्ड मिलने के बाद इस्राएल ने बहुत बड़ी विजय पाई, वैसे ही हनन्याह और सफीरा को दण्ड मिलने के परिणामस्वरूप सुसमाचार के लिए नई विजय प्राप्त हुई!

> और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिह्न और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे;[77] और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।[78] परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था, कि उन में जा मिले;[79] तौभी लोग उन की बड़ाई करते थे। और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां[80] प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे (आयतें 12-14)।

अनुशासन के परिणामों पर ध्यान दें: (1) प्रेरितों की विश्वसनीयता बरकरार थी। वे अभी भी "चिह्न और अद्भुत काम" कर सकते थे। (2) कलीसिया में एकता बनी रही। वे "सब एक चित्त" थे। (3) जो लोग केवल कुछ लाभ के लिए,[81] "कलीसिया में शामिल हुए होंगे"[82] वे भयभीत हो गए।[83] उन्होंने "उनके साथ मिलने का" साहस नहीं किया। (4) जो लोग मसीही नहीं भी बने थे, वे भी कलीसिया का सम्मान करते थे। "लोग उनकी बड़ाई करते थे।" (5) याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि अनुशासन से कलीसिया की हानि *नहीं* हुई। हनन्याह और सफीरा के अन्त ने सच्चे विश्वासियों के लिए कोई रुकावट नहीं डाली। "और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में *और भी अधिक* आकर मिलते रहे।"

शैतान के षड्यन्त्र की असफलता से कलीसिया को लाभ मिला क्योंकि उसके षड्यन्त्र के सफल हो जाने से घोर संकट आ सकता था! शैतान कलीसिया में फूट डालना, इसे अपमानित करना और घटाना चाहता था, परन्तु यह एक रही, इसकी प्रशंसा हुई और बढ़ती गई! फिर भी, जैसा कि हम अपने अगले पाठ में देखेंगे शैतान तो खत्म नहीं हुआ था।

सारांश

4:32-5:14 में हमारे लिए बहुत सी शिक्षाएं हैं: परमेश्वर चाहता है कि हम नि:स्वार्थ बनें। परमेश्वर चाहता है कि हम एक रहें। परमेश्वर चाहता है कि सुसमाचार के प्रचार के लिए हम अपने जीवन दें। परमेश्वर चाहता है कि हम कलीसिया के अगुओं का आदर करें। परमेश्वर चाहता है कि हम *उसका* आदर करें। परमेश्वर चाहता है कि हम जान लें कि हम उसे धोखा नहीं दे सकते, क्योंकि वह सब कुछ जानता और सब कुछ देखता है। हमें यह शिक्षा भी मिलती है कि यद्यपि हम मसीही हैं, परन्तु पाप के कारण हम गिर *सकते* हैं;[84] इसलिए हमें चौकस रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 10:12)।

तथापि, फिर हमारे लिए शिक्षा यह है कि जितना महत्वपूर्ण यह है कि हम *क्या* करते हैं, उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि हम उसे *क्यों* करते हैं। *जो कुछ* हनन्याह और सफीरा ने करने की योजना बनाई थी, मूलत: वह अच्छी बात थी परन्तु वह ऐसा क्यों करना चाहते थे, इसने उनके चन्दे के महत्व को निष्फल कर दिया। उन्होंने ऐसा मनुष्यों से प्रशंसा पाने के लिए किया था - सो उन्होंने अपने दान को उससे बड़ा दिखाने के लिए झूठ बोला जितना कि वह था नहीं।

प्रजु की सेवा के लिए मेरे *इरादे* क्या हैं। आपके क्या हैं? क्या मैं उसकी सेवा इसलिए करता हूं कि मैं उसके प्रति समर्पित हूं, क्योंकि ऐसा करना उचित है? या क्या मैं उसकी सेवा इसलिए करता हूं कि ''मनुष्यों को दिखाने'' के लिए उसमें से कुछ प्राप्त कर लूं?

यदि जांच से पता चलता है कि उस महान डॉक्टर से हमारे दिल का बड़ा ऑपरेशन होना आवश्यक है, तो उस पर *अभी* ध्यान देना ज़रूरी है। हो सकता है कि परमेश्वर हमें हनन्याह और सफीरा की तरह न मारे, परन्तु जैसे उन दो कपटियों पर मृत्यु आई वैसे ही अब अचानक हम पर भी आ सकती है और मृत्यु आ पहुंचने पर अपने सृष्टिकर्ता से मिलने की तैयारी करने में बहुत देर हो चुकी होती है। अपने मनों में अंकित कर लें कि यदि कोई तैयार नहीं है तो ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना ज़यानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)!

प्रवचन नोट्स

''गिव एण्ड टेक'' नाम से प्रेरितों 4:32-37 में से रिक ऐचले ने एक प्रवचन दिया। उसका आधा भाग मसीहियों को केवल उदारता से देने वाले ही नहीं, बल्कि यह सिखाने के लिए भी है कि अनुग्रह से *पाने* वाले कैसे बनें। पाठ में ध्यान दिलाया गया है कि, स्पष्ट है कि यरूशलेम के सदस्य एक दूसरे के साथ *खुले* थे, उनके जीवन की आवश्यकताओं को जानते थे। हममें से कोई भी, मसीह में अपने भाइयों तथा बहनों से अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहता और कोई भी कलीसिया पर बोझ नहीं बनना चाहता; अहंकार को भी उन आवश्यकताओं को मानने में बाधा नहीं बनने देना चाहिए और ईमानदारी से सहायता करने की चाह रखने वालों को मना नहीं करना चाहिए।

प्रेरितों के काम की पुस्तक से प्रचार करने का दिलचस्प ढंग यह है कि मुज़्य पात्रों के बारे में शृंखला बनाकर प्रवचन दें। बरनबास एक आकर्षक पात्र है। अपवाद के साथ (गलतियों 2:13), वह हमेशा एक अनुकरणीय पात्र ही है और किसी न किसी को उत्साहित करता ही रहता है (15:36-39 में आपको वह सही लगता हो या पौलुस, बरनबास अपने नाम के अनुरूप ही अर्थात ''प्रोत्साहन का पुत्र'' रहा)। ये कुछ आयतें हैं आपको चाहिए कि इनका उपयोग करें: प्रेरितों 9:26-28; 11:22, 24-26, 30; 12:25; 14:4,14; 15:2, 5, 12, 36-41; 1 कुरिन्थियों 9:6; गलतियों 2:1, 9, 13; कुलुस्सियों 4:10.

हनन्याह और सफीरा की कहानी से ''पाप को गज़्भीरता से लेना सीखना'' पर एक प्रज़ावशाली पाठ तैयार हो सकता है! (शास्त्र के दूसरे भागों को संक्षेप में परिचय और सारांश बताने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है)। आकान की कहानी (यहोशू 7) तथा हनन्याह और सफीरा की कहानी (प्रेरितों 5) में समानता बताई जा सकती है। यदि आप ऐसा करते हैं तो, याकूब 1:14, 15 को भी ले लें, जो वैसी ही है जैसे आकान की घटना है। यदि आप नाटकीय रूप में बारीकी से बताना चाहें, तो आप प्रवचन को यह शीर्षक भी दे सकते हैं ''मृत्यु कलीसिया की ओर जाती है!'' मैंने आराधना सभाओं में लोगों को दिल का दौरा पड़ने के कारण ढेर होते देखा है: प्रचार करते-करते कई प्रचारक पुलपिट पर ही मर गए; परन्तु (जहां तक मैं जानता हूं) मैंने किसी को परमेश्वर की ओर से मार पड़ते नहीं देखा और आशा है कि कभी देखूंगा भी नहीं!

पादटिप्पणियां

[1]''प्रेम सभाओं'' को नये नियम के विशेष शब्द ''प्रेम'' के लिए *अगापे* के बहुवचन रूप *अगापायस* से अनुवाद किया गया है। यद्यपि *अगापायस* का अक्षरश: अर्थ ''प्रेम करता'' (संज्ञा) है, यह शब्द आरज़िक मसीहियों की संगति में लिए जाने वाले भोजनों के लिए प्रयुक्त होता था। [2]प्रेरितों 2:46. अधिकांश लेखकों का विचार है कि 1 कुरिन्थियों 11 में वर्णित भोजन प्रेम-भोज की बदनामी था, क्योंकि कुरिन्थियों ने प्रेम-भोज को प्रभु भोज के साथ मिला दिया था और इन दोनों को मतवालेपन के झगड़े में बदल दिया था। [3]जब मैं बालक था तो आम तौर पर पकाने से पहले दाल मुझे ''बीनने'' के लिए दी जाती, और कई बार मैं अधिक ध्यान से नहीं देखता था! [4]यदि आप सागर के निकट रहते हैं, तो आप ऐसे एक दो उदाहरण जोड़ सकते हैं, जिनसे आपके श्रोता परिचित हों। [5]यदि आपको शब्दों से खेल अच्छा लगता है तो आप टिप्पणी कर सकते हैं कि अंग्रेज़ी भाषा में मसीहियत के साथ ''शिप'' शब्द कैसे जुड़ा हुआ है: फ़ैलो*शिप,* पार्टनर*शिप,* वर*शिप,* लीडर*शिप,* स्टूयर्ड*शिप,* इत्यादि। [6]दुर्भाग्य से, इन आरज़िक मसीहियों में पाई जाने वाली एकता कायम नहीं रही (1 कुरिन्थियों 1:10-13)। [7]प्रेरितों 2:46 कहता है कि वे ''एक मन'' थे। इन सभी वाक्यांशों से पता चलता है कि उनकी एकता बाहरी ही नहीं, बल्कि गहराई से थी। हमें ध्यान करना चाहिए कि लूका का कथन साधारण तौर पर पूरी मण्डली की विशेषता बताता है। हम उन *दो* के बारे में जानते हैं जिनके मन अन्य मसीहियों के साथ एक नहीं थे (हनन्याह और सफीरा, अध्याय 5)। [8]''मण्डली'' शब्द का उपयोग *पलैथॉस* का अनुवाद करने के लिए किया जाता है। बहुत से अनुवादों में ''जनसमुदाय'' है [9]''उसके'' उनके काम के ढंग को कहा गया है। [10]यह बात यरूशलेम के लिए हमेशा सत्य नहीं होती थी (रोमियों 15:26), परन्तु कुछ समय के लिए यह सत्य थी।

[11]अपनी दो साल की पोती के साथ झगड़ा आरम्भ करने के लिए मुझे केवल *मेरा* अर्थात ''मेरा जूता'' या ऐसा ही कुछ कहना पड़ता है। वह गुस्से से देखती है, अपनी छाती पर हाथ मारती है, और ऐलान करती है, ''मेरा!'' [12]प्रेरितों 2:44, 45 पर नोट्स देखिए। [13]प्रेरितों 12 में, यूहन्ना मरकुस की माता मरियम के पास, यरूशलेम में अज़ी भी अपना घर था और उसके पास नौकर थे (आयतें 12, 13)। [14]सही ढंग बताना लूका का उद्देश्य नहीं था, उसका उद्देश्य आरज़्निक मसीहियों की नि:स्वार्थता को बताना था। [15]यह पवित्र स्थान को बनाने के लिए स्वेच्छा के ढंग जैसा ही था (तु. निर्गमन 36:5-7)। [16]यह नये नियम में साझे ''कलीसियाई कोष'' के कुछ संकेतों में से एक है। [17]मैंने कलीसिया को ज़रूरतमन्द सदस्यों को सम्भालते देखा है, परन्तु साधारणतया यह इकट्ठे हुए चन्दे से ऐसा करती है, प्रेरितों 2 और 4 में जैसे वर्णित बलिदान के कार्यों से नहीं। [18]''अनुग्रह'' शब्द *चैरिस* से लिया गया है, जो परमेश्वर की कृपा या मनुष्य की कृपा हो सकती है (इसका उपयोग लूका 2:52 में परमेश्वर और मनुष्य दोनों के अनुग्रह के लिए किया गया है)। अनुवादकों के बहुमत को स्पष्टत: विचार था कि लूका परमेश्वर की कृपा की बात कर रहा था। तथापि, मेरे मन में प्रेरितों 2 के अन्त और प्रेरितों 4 के अन्त के बीच में अनेक समानताएं हैं जो मनुष्य की कृपा के पक्ष में लगती हैं। [19]बरनबास का जन्म कुप्रुस के द्वीप पर हुआ, जो कि भूमध्य सागर के उत्तरपूर्वी भाग में है (किसी मानचित्र में देखें)। यहूदी लोग अत्याचार और आर्थिक विवशता के कारण बिखर गए थे। [20]तात्पर्य यह है कि बिके हुए माल का *सारा* मूल्य लाया आगे की कहानी के विपरीत है।

[21]''प्रेरितों के पांवों पर'' चल रही इस कहानी का शीर्षक है: बरनबास और हनन्याह ने अपना धन प्रेरितों के पांवों पर रख दिया (4:37, 5:2); सफीरा पतरस के पांवों पर गिरकर मर गई (5:10)। ''पांवों पर'' का अर्थ यह नहीं कि उनके पांवों के ऊपर रख दिया, बल्कि यह कि उनके पास रख दिया था (जैसे विद्यार्थी अपने शिक्षक के ''पांवों में'' बैठे)। [22]''का पुत्र'' एक इब्रानी अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है ''के स्वभाव में भागीदार होना।'' [23]भाषाविदों को आपत्ति है क्योंकि ''शान्ति का पुत्र'' ''बरनबास'' का सही-सही अनुवाद नहीं है। परन्तु लूका ने वही कहा जो नाम का *अर्थ* है। [24]यूनानी शब्द के अनुवाद ''शान्ति'' का अर्थ ''सांत्वना,'' ''प्रोत्साहन,'' या ''उपदेश'' हो सकता है। सभी शब्द एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। [25]गिनती 18:20, 21, 24; 35:1-8; यहोशू 21:14. [26]टीकाकार संघर्षरत हैं कि क्या एक लेवी के पास भूमि हो सकती है या नहीं, परन्तु, यिर्मयाह याजकों के कबीले से था और उसके पास भूमि थी (यिर्मयाह 1:1; 32:6-15)। [27]प्रत्येक अच्छी वस्तु की नकल होती है। [28]''परन्तु'' साधारणतया हनन्याह और सफीरा के काम की शेष मण्डली के काम से तुलना के लिए है विशेषकर उससे जो कुछ बरनबास ने किया था। [29]पद 3 बताता है कि उन्होंने ही भूमि बेची। [30]''कपटी'' यूनानी मिश्रित शब्द का रूपांतरण है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''जो उत्तर या प्रत्युत्तर कम देता है।''

[31]एक साथी प्रचारक, विक्टर लॉयड, का विचार है कि उन्होंने अपने सौदे से भौतिक लाभ लेने की आशा की होगी: अपनी सारी सम्पत्ति बेचने का बहाना करके, उन्होंने अपना नाम कलीसिया से सहायता प्राप्त करने वालों की सूची में डलवाना चाहा होगा। [32]*सर्वे ऑफ़ ऐक्ट्स,* अंक 1 में जिमी ऐलन का कहना है कि धोखा सफल हो सकता था यदि हनन्याह खेत के मूल्य के आस-पास ले कर आता, सो चन्दा सम्भवत: काफी बड़ी राशि होगी। [33]वे सुलेमान के ओसारे में सार्वजनिक स्थान पर मन्दिर के किसी कक्ष में हो सकते हैं (प्रेरितों 5:12)। स्थान चाहे कोई भी हो, इसका एक द्वार भी था (आयत 9) [34]हमें यह नहीं मालूम कि पतरस को कोई आत्मिक दान मिला कि नहीं जिससे वह हनन्याह के मन के भीतर झांक सका या केवल पवित्र आत्मा ने हनन्याह के पाप को उजागर करने के लिए उसके द्वारा बात की। [35]शैतान का अर्थ है ''विरोधी'' और यह नये नियम में शैतान के नाम के लिए प्रयुक्त हुआ। [36]कभी-कभी, कोई कहता है (कई बार थोड़ा मज़ाक में), ''शैतान ने मुझसे यह करवाया!'' यह बात गांठ बान्ध लें कि शैतान हमसे वह कुछ भी नहीं *करवा* सकता जो हम नहीं करना चाहते! [37]मुझे चिन्ता होती है जब मैं मसीहियों को जन्मपत्रियों, राशिफलों, या रहस्य की अन्य अभिव्यक्तियों के साथ ''प्रसन्न होते'' देखता हूं। आप शैतान और उसके हथियारों से जितना भी दूर रह सकें, रहें। [38]अक्षरलोप एक अंलकार है जिसमें शब्द नहीं होते, परन्तु

उनका अर्थ होता है। [39]ध्यान दें कि पद 3 में, पतरस ने कहा कि हनन्याह ने *पवित्र आत्मा* के साथ झूठ बोला और पद 4 में पतरस ने कहा कि उसने *परमेश्वर* के साथ झूठ बोला। आरज़िक कलीसिया को यह समझ थी कि पवित्र आत्मा उनके मध्य परमेश्वर था। [40]कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि जब तक किसी काम से किसी दूसरे को कष्ट नहीं होता, उसे करना उचित है। यदि *परमेश्वर* ने इसे न करने के लिए कहा है, तो हम उसकी अवज्ञा करके *उसे* कष्ट देते हैं, इससे किसी और को कष्ट हो या नहीं।

[41]यह दृढ़ भावना की प्राचीन तथा नवीनतम अभिव्यक्तियों का एक संग्रह है। [42]हर किसी को पता था कि हनन्याह और सफीरा की मृत्यु के लिए पतरस नहीं, बल्कि परमेश्वर ज़िम्मेदार था; नहीं तो पतरस पर हत्या का आरोप लगाया जाता। [43]आमतौर पर, नया नियम में ''प्राण त्यागने'' (KJV के शब्द) की बात करते हुए, यूनानी में *अनेक* शब्द हैं जो इसे ''आत्मा सौंपना'' कहते हैं। [44]इससे प्रेरितों के प्रति भी उनके मन में और सम्मान बढ़ गया! (यह प्रेरितों 5:13 के अर्थ का भाग हो सकता है)। [45]जो लोग पतरस और/या परमेश्वर पर अनुचित व्यवहार का आरोप लगाते हैं, उनका कहना है कि हनन्याह को मरने से पहले मनफिराने का अवसर नहीं मिला था। क्योंकि (जैसे आमतौर पर लूका साधारणतया देता है) स्पष्ट है कि हमारे पास जो कुछ वहां हुआ उसका संक्षिप्त वर्णन है, हम उस सब के बारे में नहीं जानते जो वहां कहा गया या हुआ। यदि हनन्याह को मन फिराने का अवसर नहीं मिला, तो हम यह मान लेंगे कि परमेश्वर उसके मन को जानता था अर्थात उसे पता था कि वह पश्चात्ताप के योग्य था या नहीं (इब्रानियों 6:4-6)। ''जितनी अच्छी तरह हम अलोचना करना जानते हैं उससे कहीं बेहतर ढंग से परमेश्वर इस संसार को चलाना जानता है।'' [46]परमेश्वर यदि चाहता तो ''प्राकृतिक'' ढंग का इस्तेमाल कर सकता था। यदि परमेश्वर ने हेरोदेस को मारने के लिए कीड़ों का प्रयोग किया, तो वह हनन्याह और सफीरा को दण्ड देने के लिए ''दिल के दौरे'' का भी इस्तेमाल कर सकता था। [47]स्पष्टत:, इस्राएल से पाप के विषैलेपन को निकालने के लिए तीव्र शल्य चिकित्सा की आवश्यकता थी। (तीव्र शल्य चिकित्सा में, न केवल अस्वस्थ भाग को ही निकाला जाता है, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि सारा कैंसर निकाल दिया गया है, गिल्टी के आस-पास के मांसतन्तु को भी निकाल दिया जाता है)। [48]हमें नहीं मालूम कि ये जवान कौन थे। परन्तु, उनकी उपस्थिति से पता चलता है, कि जो कुछ हुआ वह प्रेरितों के साथ रहने वाले लोगों में गुप्त में नहीं हुआ; किसी सीमा तक यह ''लोगों के बीच में'' हुआ। ''जवान'' शब्द पर बल हमें स्मरण दिलाता है कि कुछ ऐसे काम हैं जो बूढ़ों की अपेक्षा जवान अच्छे ढंग से कर सकते हैं (उनमें, भारी बोझ उठाना और भूमि को खोदना भी शामिल है)। परमेश्वर ने हर उम्र के लोगों के लिए कुछ न कुछ करने को रख छोड़ा है। [49]मूलत:, इसका अर्थ है ''उसे लपेटा।'' हो सकता है कि शायद शरीर को कफ़न में बांधने के लिए ''उसकी अर्थी बनाई'' का अर्थ गाड़ने की जल्दी में की गई तैयारी हो या यह केवल दफ़नाने से पहले लाश को ढकने की प्रथा हो-जैसे हम दफ़नाने से पहले लाश को एक कपड़े या बक्से में लपेटते/ढकते हैं। लपेटने के लिए उनका उद्देश्य इस बात को गुप्त रखने की कोशिश का एक भाग भी हो सकता है ताकि दूसरों को तब तक पता न चले जब तक पतरस का सामना सफीरा के साथ न हो। [50]उन दिनों, जनाज़े से सम्बन्धित समारोह शायद आज के कई स्थानों से अधिक होता था।

[51]नादाब और अबीहू के पिता, हारून को शोक करने या जनाज़े में भाग लेने की अनुमति नहीं मिली थी! [52]अन्य दृश्य भी सम्भावित हैं। हो सकता है कि योजना हो कि वह पहले आकर प्रशंसा पाए और बाद में उसकी पत्नी बची हुई प्रशंसा पाए। तथापि, प्रस्तुत शृंखला में अधिक समानता लगती है। [53]यह कल्पना करना कठिन है कि बात सफीरा तक न पहुंची हो यदि मना न किया गया हो। [54]जो भी हो आप ध्यान दें कि यह अद्‌भुत था! यह जानते हुए कि मनुष्य गप्पों को कितना प्रिय जानते हैं, मैं मज़ाक में अपनी कक्षा से कहता हूं, ''प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म था!'' बाइबल के आलोचक कहानी के इस भाग को ''असम्भव'' कहते हैं, परन्तु मैं उन दो हज़ार वर्ष के बाद आने वालों के अनुमान से बढ़कर उस एक जीवित की गवाही पर भरोसा रखता हूं! वहां उपस्थित लोगों को उस सबके बारे में जो उन्होंने देखा था, अन्त में बोलने की अनुमति मिल गई, क्योंकि पद 5 ''सब सुनने वालों'' की बात करता है। [55]*यदि* पतरस ने ऐसी कोई मनाही की थी, तो निश्चित रूप से उसका उद्देश्य

उत्तम रहा होगा। प्रेम मांग करता है कि हम उसकी कार्यवाही से उत्तम रचना करें (1 कुरिन्थियों 13:7)। यह सुझाव देना कि ''पतरस ने उसको फंसाया'' पतरस और उसका सुझाव देने वालों की निन्दा है।[56]''उसे कहा'' शब्दों से हमें पता चलता है कि लूका फिर आत्मा के संक्षिप्त विवरण दे रहा है - यह बताते हुए कि हमें क्या जानने की आवश्यकता है और उससे अधिक नहीं।[57]सफीरा के योगदान और शब्दों कि ''*तुमने* वह भूमि ... बेची'' पर बल से कई लोगों ने अनुमान लगाया है कि बेची गई भूमि हनन्याह की नहीं बल्कि सफीरा की थी।[58]हमें यह समझना है कि जितना मूल्य पतरस ने बोला उसका दावा हनन्याह ने किया था कि उसने उतने में ही भूमि बेची। कुछ लोग टिप्पणी करते हैं कि यह सम्भव है कि पतरस ने भूमि के वास्तविक विक्रय मूल्य की घोषणा की और यह कि उसने (सफीरा ने) स्वीकार किया कि वह सही था- यह बता देती है कि उसने इसके लिए पश्चात्ताप और अंगीकार किया। यदि ऐसा है, तो अगली आयत में पतरस के शब्दों की कठोरता की व्याख्या कठिन है।[59]अनुवादित यूनानी शब्द ''परीक्षा'' का अर्थ ''परखना'' भी हो सकता है।[60]यह *गलत प्रकार की एकता* का उदाहरण है। उन्होंने एका किया था (ध्यान दें आमोस 3:3), परन्तु उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध किसी बात पर एका किया था। एकता बहुत आवश्यक है (यूहन्ना 17:20-23), परन्तु परमेश्वर की आज्ञा मानना *अधिक* आवश्यक है (तु. मत्ती 10:34)।

[61]जब किसी पति को लगता है कि उसे अपनी पत्नी की ''परीक्षा'' लेनी चाहिए, तो यह इसलिए नहीं है कि वह उस पर भरोसा करता है, बल्कि इसलिए है क्योंकि वह उस पर भरोसा नहीं करता।[62]बर्टन कॉफ़मैन का मानना है कि ऐसा सौदा लोगों के लिए दर्ज किया जाना चाहिए। हो न हो, इस घटना के तथ्य अन्त में उजागर हो ही जाने थे (गिनती 32:23)।[63]या तो उसने जाने-पहचाने कदमों की आहट सुनी, या पवित्र आत्मा ने उसे बताया कि वे वहां पहुंच गए हैं। दफ़नाने के लिए स्पष्टत: लगभग तीन घंटे का समय लगा था।[64]टीकाकार यह सुझाव देते हुए कि उसे दिल का दौरा पड़ने के लिए इतना ही काफ़ी था, उस ''दोहरे सदमे'' की बात करते हैं जो सफीरा को मिला। तथापि, हनन्याह और सफीरा दोनों के कुछ घण्टे के समय में स्वाभाविक हृदयाघात के विशेष लक्षण किसी को भी बहुत कम नज़र आते हैं। सम्भवत: दोनों को ''दिल का दौरा'' पड़ा, परन्तु इसमें *परमेश्वर का* हाथ था।[65]अपना फैसला सुनाते समय अभी भी वह पवित्र आत्मा की अगुआई से बोल रहा था।[66]यह वही अभिव्यक्ति है जो आयत 5 में मिलती है - फिर ज़ोर देते हुए कि जो सफीरा के साथ हुआ वह स्वर्गीय न्याय था (आयत 5 पर नोट्स देखिए)।[67]KJV में प्रेरितों 2:47 में ''कलीसिया'' है, परन्तु विश्वसनीय लेखों में उस पद में *इकलीसिया* नहीं मिलता (प्रेरितों 2:47 पर नोट्स देखिए)।''कलीसिया'' शब्द के लिए प्रेरितों 5:11 पहला हवाला है जिस पर कोई विवाद नहीं।[68]प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस शब्द के लगभग तेईस उपयोग हैं।[69]*इक* (बाहर) + *केलियो* (बुलाना)। सप्तति अनुवाद में उपयोग के कारण *इकलीसिया* के इस मूल अर्थ को कुछ लोग चुनौती देते हैं। तथापि, मैं अभी भी मानता हूं कि शब्द का *मूल* अर्थ यही है।[70]शब्दावली में देखिए ''कलीसिया''।

[71]शब्द का उपयोग एक बार ''जंगल में (इस्राएल की) कलीसिया'' के लिए भी किया गया (प्रेरितों 7:38)।[72]शब्द ''कलीसिया'' का उपयोग इसके मूल अर्थ ''सभा'' के लिए भी किया जा सकता है, यहां मसीही सभा (ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 14:23)।[73]मलाकी नबी ने इसे ''परमेश्वर को लूटना'' कहा है (मलाकी 3:8)।[74]कुछ पापों के कारण शारीरिक मृत्यु आ सकती है (हत्या, शारीरिक पाप, आदि), परन्तु आज के अधिकांश पापों के परिणाम तब तक नहीं दिखेंगे जब तक न्याय का दिन न आ जाए।[75]इन में से एक सबसे प्रसिद्ध कॉलिन्सविले, ओकलाहोमा में प्रभु की कलीसिया के प्राचीनों के विरुद्ध आया मुकद्दमा है- लोगों को मैं जानता हूं।[76]1 कुरिन्थियों 5:5, 7, 9, 11, 13; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6.[77]शास्त्र इस बात पर बल देना जारी रखता है कि चिह्न और अद्भुत काम *प्रेरितों के* हाथों से होते थे। ए.सी. हार्वे सही था जब उसने कहा कि ''प्रेरितों के अधिकार को ... इन आश्चर्यकर्मों से बड़ा बल मिला था जो कि *विशेष तौर पर* प्रेरितों के हाथों का काम था।''[78]प्रकट रूप से यह यरूशलेम में मसीहियों के इकट्ठा होने का साझा स्थान था (प्रेरितों 3:11 भी देखिए)।[79]पहली नज़र में, ये आयतें आपस में उलझती लगती हैं। टीकाकार इस पर सहमत नहीं हैं कि ''औरों'' शब्द किस की बात करता है, परन्तु आयत की

बात स्पष्ट लगती है: यद्यपि हनन्याह और सफीरा की घटना से कुछ लोग घबरा गए थे, परन्तु आम तौर पर इससे कलीसिया और उसके काम में सहायता मिली। [80]यह पहला स्पष्ट उल्लेख है कि महिलाएं भी मसीही बनीं-बेशक हमें विश्वास है कि बहुत सी पहले ही थीं। (उन सब प्रेम सभाओं में भोजन और कौन तैयार करता था?) हम एक महिला सदस्य अर्थात सफीरा के नाम का उल्लेख पहले भी पढ़ चुके हैं (यद्यपि वह एक अच्छा उदाहरण नहीं है)।

[81]''शामिल होना'' ''संगठित'' का अक्षरश: अर्थ है। अमेरिका में यह शब्द ''रेलगाड़ी में कूदने'' के भाव को प्रकट करता है। इसे किसी ''प्रसिद्ध लहर में शामिल होना'' कहा जा सकता है। [82]यह एक परीक्षा थी, क्योंकि सभी सदस्यों की आवश्यकताएं पूरी हो रही थीं। आज भी कुछ लोग ''कलीसिया में शामिल'' होने की परीक्षा में पड़ते हैं जब उन्हें लगता है कि कलीसिया उनकी देखभाल करती है। [83]कई लोगों का विचार है कि वह ''औरों'' कलीसिया के अन्य सदस्यों के लिए है, जो प्रेरितों से अपनी दूरी रखने लगे थे। कुछ लोगों का विचार है कि यह ''और'' मसीह के शत्रु हैं जो कुछ देर के लिए कलीसिया को छोड़कर चले गए। परन्तु, मैं दी गई व्याज्या को पहल देता हूं। [84]टीकाकार संघर्षरत हैं कि ''क्या हनन्याह और सफीरा सचमुच मसीही थे भी'' और ''क्या उनका उद्धार हुआ या नाश।'' यह विश्वास करने के लिए कि हनन्याह और सफीरा वास्तव में मसीही, अर्थात कलीसिया के सदस्य नहीं थे, मेरे पास कोई कारण नहीं है। कलीसिया के संदर्भ के अन्तर्गत अनुशासन सदस्यों के लिए है, उनके लिए नहीं जो सदस्य नहीं (1 कुरिन्थियों 5:9-11)। फिर, हमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि उनमें से किसी ने भी पश्चात्ताप किया हो, सो शास्त्र उनके लिए बाद के जीवन में कुछ आशा रखता है। परन्तु, कहानी में यह मुज्य बात नहीं है, हम केवल यही कहते हैं, ''न्याय तो परमेश्वर के हाथ में है।''